SHEO/KVK/L/459/2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर, (बिहार)

उन्नत बकरी पालन : एक लाभकारी व्यवसाय

- श्री श्याम कुमार
- डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी,
- डॉ. संचिता घोष
- डॉ. सौरभ शंकर पटेल
- डॉ. एन.एम.एच. इनलिंग
- श्री विवेक कुमार सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर

भा.कृ.अनु.प. कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पटना

बकरी पालन पौराणिक समय से ही पशुपालन का एक अभिन्न अंग रहा है। वर्तमान समय में भूमिहीन कृषक, श्रमिक, छोटे सीमांत किसान तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों में बकरी पालन की लोकप्रियता अत्यधिक है। बहुउद्देशीय उपयोगिता एवं सरल प्रबंधन पशुपालकों में बकरी पालन की ओर बढ़ते रुझान के प्रमुख कारण हैं। भारत में बकरियों की संख्या 1351.7 लाख है, जिसमें से अधिकांश (95.5 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। केवल अल्प भाग (4.5 प्रतिशत) ही शहरी क्षेत्रों में है। भारत में होने वाले कुल दुग्ध और मांस उत्पादन में बकरी का उत्कृष्ट योगदान है। बकरी का दूध और मांस का भारत में उत्पादित कुल दुग्ध और मांस में क्रमशः 3 प्रतिशत (46.7 लाख टन) और 13 प्रतिशत (9.4 लाख टन) हिस्सा है। ये आंकड़े स्पष्ट रूप से भारतीय समाज में बकरी पालन के व्यवसाय के महत्व को प्रमाणित करते हैं।बकरी पालन व्यवसाय से लाभ कमाने के लिए बकरियों में पोषण, स्वास्थ्य एवं प्रजनन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकतरीकों को अपनाकर बकरी पालन से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

बकरी की नस्ल का चयन

व्यावसायिक बकरी पालन आरंभ करते समय बकरी की उन्नतनस्ल का चयन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके साथ ही क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, उपलब्ध दाना/चारा तथा बाजार मांगका ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है। सामान्यतः यह ध्यान देना चाहिए कि बकरी की नस्ल उसी जलवायु से हो जहां व्यवसाय शुरू करना है। बकरी पालन के लिए अच्छी नस्ल के प्रजनक बकरे बाहर से लाकर स्थानीय बकरियों से गर्भाधान कर नस्ल सुधार का कार्य किया जा सकता है। प्रायः देखा गया है कि जो बकरी अधिक मेमने देती है, उसके मेमने कम वजन के होते हैं। दूसरी ओर जो बकरी कम मेमने देती है उसके मेमने बड़े तथा अधिक वजन वाले होते हैं। इस प्रकार सभी प्रजातियां लगभग समान लाभ देती हैं।

प्रजनक बकरों का चयन

- बकरे के जनक शुद्ध नस्ल के हों तथा स्वयं भी शारीरिक रूप से स्वस्थ, आकर्षक एवं क्षमतावान हों।
- बकरा किसी आनुवंशिक रोग से ग्रसित न हो एवं उसका वाहक भी न हो।
- जनक उच्च प्रजनन क्षमता वाले हों। इनकी सन्तानों में मृत्युदर का स्तर कम रहा हो।
- जनक में दूध, मांस या रेशे की उत्पादक क्षमता उच्च स्तरीय रही हो।
- बकरे में पूर्ण रूप से विकसित जननांग हों एवं उसकी प्रजनन क्षमता भी उच्च स्तरीय हो।
- बकरे विभिन्न उम्र सोपानों (जन्म, तीन माह, छह माह, नौ माह और बारह माह) पर अधिक भार धारक हो।

बकरियों में जनन प्रबंधन

बकरी पालन व्यवसाय को सफल बनाने के लिए बकरियों में निम्न गुणों का पाया जाना आवश्यक है:

- बकरी कम आयु में जनन योग्य हो जाए।
- बकरी प्रति ब्यांत अधिक बच्चे दे।
- बकरी ब्याने के बाद जल्दी पुनः गर्भधारण कर ले।
- बकरी के जीवनकाल में अधिकाधिक बच्चे पैदा हों।

बकरियों में परिपक्व होने की आयु उनकी नस्ल, आकार, खानपान व देखभाल पर निर्भर करती है। प्रायः 8–12 माह में गर्मी के लक्षण प्रकट करने लगती हैं। इनको इस आयु से दो–तीन महीने देर से गर्भित कराना उचित रहता है, ताकि जननतंत्र पूर्ण रूप से विकसित हो सके। इनका मदचक्र लगभग 18–21 दिनों का होता है और बकरियां लगभग 12–36 घंटे तक मदकाल में रहती हैं। गर्मी आने के 12 से 18 घंटे के बाद उनको गर्भित कराना चाहिए। अप्रैल–मई तथा अक्टूबर–नवंबर में गाभिन कराने पर मेमने अनुकूल मौसम में प्राप्त होते हैं।

बकरी आवास प्रबंधन

बकरी के आवास की लंबाई वाली भुजा पूर्व–पश्चिम दिशा में होनी चाहिए। लंबाई वाली दीवार को एक से डेढ़ मीटर ऊंचा बनवाने के पश्चात दोनों तरफ जाली लगानी चाहिए। बाड़े का फर्श कच्चा तथा रेतीला होना चाहिए। उसमें समय–समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करते रहना चाहिए। वर्ष में एक से दो बार बाड़े की मिट्टी बदल देनी चाहिए। 80 से 100 बकरियों के लिए बाड़ा 20 6 वर्ग मीटर ढका हुआ तथा 12 X 20 वर्ग मीटर खुला जालीदार क्षेत्र होना चाहिए। बकरा, बकरी तथा मेमनों को (ब्याने के एक सप्ताह बाद) अलग–अलग बाड़ों में रखना चाहिए। मेमनों को बकरी के पास दूध पिलाने के समय ही लाना चाहिए। अधिक सर्दी, गर्मी व बरसात में बकरियों के बचाव का व्यापक रूप से प्रबंध करना चाहिए।

बकरी पोषण प्रबंधन

बकरी को प्रतिदिन उसके भार का 3–5% शुष्क आहार खिलाना चाहिए। एक वयस्क बकरी को 1–3 कि.ग्रा. हरा चारा, 500 ग्राम से 1 कि.ग्रा. भूसा (यदि दलहनी हो तो और अच्छा है) तथा 150 ग्राम से 400 ग्राम तक दाना प्रतिदिन खिलाना चाहिए। दाना हमेशा दला हुआ व सूखा ही दिया जाना चाहिए और उसमें पानी नहीं मिलाना चाहिए। साबुत अनाज नहीं खिलाना चाहिए। दाने में 60–65: अनाज (दला हुआ) 10–15% चोकर, 15–20% खली (सरसों की खली छोड़कर), 2% मिनरल मिक्स्चर तथा एक 1% नमक का मिश्रण होना चाहिए। बकरियों को प्रजनन काल के एक माह पूर्व से ही 50–100 ग्राम तक दाना अवश्य देना चाहिए, जिससे स्वस्थ बकरी से अधिक मेमने पैदा हो सकें। इसी प्रकार बकरों को भी प्रजनन काल के दौरान प्रतिदिन सौ ग्राम दाना अतिरिक्त मात्रा में देना चाहिए। बकरियों को साफ पानी पिलाना चाहिए। नदी, तालाब व गड्ढे में जमा हुए गन्दे पानी को पीने से बकरियों को बचाना चाहिए।

मेमनों / बच्चों को आहार देना (जन्म से तीन महीने तक)

- जन्म के तुरंत बाद बच्चों को कोलोस्ट्रम खिलाएं।
- जन्म के 3 दिन तक दूध की निरंतर उपलब्धता के लिए मां और बच्चों को 2–3 दिनों तक एक साथ रखें।
- 3 दिनों के बाद और दूध छुड़ाने तक मेमनोंध्बच्चों को दिन में 2 से 3 बार दूध पिलाएं।
- लगभग 2 सप्ताह की उम्र में बच्चों को हरा कच्चा चारा खाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- एक महीने की उम्र में बच्चों को सांद्रण मिश्रण (क्रीप फीड) प्रदान किया जाना चाहिए।

आदर्श क्रीप फीड की संरचना

- मक्का – 40%
- मूंगफली केक –30%
- गेहूं की भूसी – 10%
- तेल रहित चावल की भूसी – 13%
- गुड़ – 5%
- खनिज मिश्रण– 2%
- नमक – 1: विटामिन ए, बी2 और डी3 और एंटीबायोटिक फीड सप्लीमेंट के साथ फोर्टिफाइड।

स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरी पालन की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि बकरियां स्वस्थ तथा निरोगी रहें। यदि वे अस्वस्थ या बीमार हो जाएं, तो उनके रोग को पहचान कर तत्काल उपचार करें। इससे बकरियों को मृत्यु से बचाकर आर्थिक हानि से बचा जा सकता है।बकरियों में पी.पी.आर., ई.टी., खुरपका, मुंहपका, गलघोंटू तथा बकरी चेचक रोगों के टीके अवश्य लगवाने चाहिए। कोई भी टीका 3–4 माह की आयु के उपरांत ही लगाया जाता है। इसलिए बरसात आते ही इन्हें रोगों से बचाने के लिए

यथासंभव प्रयास करना चाहिए। ये सभी रोग बहुत तेजी से फैलते हैं। इन रोगों के लक्षण देखते ही यथाशीघ्र उपचार के उपाय करने चाहिए। इन रोगों का देसी इलाज भी प्रभावी होता है। पशु चिकित्सक को दिखाकर उपचार कराया जा सकता है। बीमार बकरी को तुरंत बाड़े से अलग करके चिकित्सा करानी चाहिए। ठीक होने पर बाड़े में पुनः लाना चाहिए। अंतःपरजीवी नाशक दवा वर्ष में दो बार पिलानी चाहिए (एक वर्षा से पूर्व दोबारा वर्षा के उपरांत)। बाह्य परजीवीनाशक दवा के पानी से सावधानीपूर्वक बकरियों को स्नान कराने से परजीवी मर जाते हैं।

मेमनों का प्रबंधन

जन्म के उपरांत सर्वप्रथम नवजात मेमने के नथुनों को साफ कर उसे सामान्य रूप से सांस लेने में मदद करनी चाहिए। जन्म के पश्चात मेमने को उसकी मां के साथ रहने के लिए पहले से तैयार बाड़े में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। मेमनों को सूखी–मुलायम घास की बिछावन वाले स्थान पर रखना चाहिए। बकरी ब्याने पर बच्चे की नाल दो इंच छोड़कर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडिन लगा देना चाहिए। नवजात मेमने को 30 मिनट के अंदर बकरी का पहला दूध (खीस) पिला देना चाहिए। दूध दो बार मेमनों को पिलाना अति उत्तम है। मेमनों को जन्म के पन्द्रह से बीस दिनों के अंदर सींग रहित कर सकते हैं।

संक्रमण एवं संक्रमण की रोकथाम

- चारा ऐसे कुंडों में रखना चाहिए जो मल से दूषित न हों।
- पानी देने वाले बर्तनों और चारा कुंडों को साफ और दूषित पदार्थों से मुक्त रखा जाना चाहिए।
- चारागाह या चरागाह जनित कृमि संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए अच्छा चराई प्रबंधन।
- स्वच्छ या सुरक्षित चरागाहों (6 से 12 महीनों तक चराई न की गई) के उपयोग से कृमि की समस्याओं को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी।
- चरागाह से संक्रमण को कम करने या सीमित करने के लिए पशुधन प्रजातियों की चक्रीय चराई का पालन किया जाना चाहिए।
- बीमारी को फैलने से रोकने के लिए युवा जानवरों को वयस्क जानवरों से अलग रखा जाना चाहिए।
- संक्रमित जानवरों को झुंड से हटा दिया जाना चाहिए और अलग रखा जाना चाहिए।
- पुनः संक्रमण को रोकने के लिए उपचार के बाद कीमोप्रोफिलैक्सिस किया जाना चाहिए।
- यदि उपयुक्त टीके उपलब्ध हों तो संक्रमण को रोकने के लिए टीकों का उपयोग किया जा सकता है।

उपरोक्त दिये गए बिन्दुओं पर ध्यान देकर बकरीपालक अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं तथा बकरियों को स्वस्थ एवं रोगमुक्त रखकर अधिक मेमने भी प्राप्त कर सकते हैं।

ब्लैक बंगाल सिरोही बर्बरी

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवहर

Printed By : NEW PRINT ZONE, Samastipur